सत्य धर्म प्रवेशिका

SATYA DHARMA PRAVESHIKA

(भाग ३)

''जो जीव, राग-द्वेषरूप परिणमित होने पर भी, मात्र शुद्धात्मा में (द्रव्यात्मा में=स्वभाव में) ही 'मैंपन' (एकत्व) करता है और उसी का अनुभव करता है, वही जीव सम्यग्दृष्टि है। यही सम्यग्दर्शन की विधि है।''

लेखक - C.A. जयेश मोहनलाल शेठ
(बोरीवली) B.Com., F.C.A.

सत्य धर्म प्रवेशिका

अनादि से हम लोकसंज्ञा से चले हैं यानी लोग जिसे सही मानते हैं उसे ही हमने सही माना। इस लिये अनादि से हम इस दु:ख भरे संसार में अनन्त दु:ख झेल रहे हैं।

Since beginningless time, we have allowed ourselves to be dictated to by the world's perceptions. This is why we have suffered unending misery in this world of sadness.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

ज्ञान और ज्ञानी के विनय से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम होता है। इस से हम सत्य-असत्य का विवेक करके मोहनीय कर्म का उपशम, क्षयोपशम या क्षय करके आत्मज्ञान पा सकते हैं।

Venerating wisdom and the wise ones results in the suppression-cum-annihilation of knowledge-obstructing karmas. This helps us discern between truth and falsehood and attain self realization through suppressing, partly suppressing and partly annihilating, and annihilating delusion-causing karmas.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम अपनी ग़लती को छिपाने या उसे सही साबित करने के चक्कर में पड़ जाते हैं तो हम अपने लिये अनन्तानन्त दु:खों को बुलावा देते हैं।

When we fall into the trap of hiding our mistakes or trying to defend and justify them, we attract endless, endless sorrows.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जीव के अनन्त संसार में डूबने के प्राय: निम्न स्थान हैं — विषय-कषाय, आरम्भ-परिग्रह, अहं-मम (मैं-मेरा), कर्तृत्वपन, निमित्ताधीनता, ईर्ष्या, परनिन्दा, दम्भ, शरीर-धन-कामभोग आदि, आर्तध्यान-रौद्रध्यान, प्राप्त धन के प्रति आसक्ति, अप्राप्त की तृष्णा, तत्त्व की ग़लत समझ, इत्यादि; इस लिये इन सभी कारणों से बचने का पुरुषार्थ करना आवश्यक है।

We drown in the endless cycle of transmigration for the following reasons:
Desires and passions, violence and attachment to material objects, identification with non-self objects, thinking oneself to be the doer of everything, surrendering to external factors, envy, criticising others, hypocrisy, attachment with the body, attachment with wealth, attachment with sensual delectation, ārta dhyāna (saturnine/sorrowful meditation) and raudra dhyana (angry meditation), strong attachment to what one already possesses, greed for what one does not possess, false understanding of reality, etc. Hence, one has to make strong and focussed efforts to save oneself from such causes.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

मुमुक्षु जब पाप करता है तब भी उस के अभिप्राय में पाप की अनुमोदना नहीं होती। अन्यथा वह मुमुक्षु कहलाने लायक ही नहीं होता।

Even when the liberation-seeker sins, it is not out of the inner will to sin. Else, he would not be worthy of being called a liberation-seeker.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

मन को हल्के विचारों में जुड़े रहने देने से हमारा अनन्त भविष्य ख़राब हो सकता है।

If we allow our mind to dwell on dirty thoughts, our endless future is at risk.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

तत्त्व का ग़लत निर्णय या विपरीत अभिनिवेष हमें अनन्त संसार ही देता है।

Wrong or false understanding of the tenets of truth only results in endless transmigration.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिन सिद्धान्त की यथार्थ समझ ही हमें आत्मप्राप्ति और अनन्त सुख दिला सकती है।

Only a correct understanding of the teachings of the Jinas can help us attain self-realisation and eternal bliss.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मप्राप्ति के लिये अपने को विषयगृद्धि से बचाना अति आवश्यक है।

In order to attain self-realisation, it is imperative to save oneself from the vultures of the senses.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम यह समझ लेते हैं कि सभी जीव सिद्ध समान हैं, तो फिर हमारे अहंकार को कहाँ स्थान मिलेगा?

When we understand that all living beings are like the Siddhas, there is no space left for arrogance.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

विद्वत्ता ऐसी चाहिये कि जो हमें संसार के दु:खों से मुक्त कराये। वास्तव में उसे ही सच्ची विद्वत्ता कहना चाहिये।

We want the scholarship that frees us from the sorrows of the world. Only such scholarship should be known as true scholarship.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

बिना विद्वत्ता भी सम्यग्दर्शन हो सकता है परन्तु बिना पात्रता सम्यग्दर्शन नहीं हो सकता।

Samyaktva does not require scholarship. But Samyaktva does require certain minimum competencies/qualities.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम जब धर्म करते हैं तब यह देखना आवश्यक है कि हम नीतिवान हैं या नहीं। अगर हम नीतिवान नहीं हैं तो फिर हमें अपने धर्म के बारे में सोचना पड़ेगा कि वह सच्चा है या नहीं। क्यों कि सत्य धर्म पर चलनेवाला व्यक्ति अनीति कर नहीं सकता।

When we practise religion, we must check if we are ethical or not. If we are not ethical, we will have to think about our religion. Because one who follows true religion can not be unethical.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम कोई भी कार्य करते हैं तब उस का उद्देश्य जाँचना आवश्यक है। अगर हमारा उद्देश्य ग़लत है तो उस उद्देश्य को ठीक करने के बारे में सोचना लाज़िमी बन जाता है।

Whatever we do, we should check the motivation behind it. If our motive is wrong, it becomes imperative that we consider correcting it.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें लगता है कि हम आँखों से देखते हैं परन्तु आँख तो केवल माध्यम हैं। जब हम किसी खिड़की से या कार की विंडस्क्रीन से देखते हैं तब वह खिड़की या विंडस्क्रीन नहीं देखती, हम देखते हैं। ठीक उसी प्रकार जब हम आँखों से देखते हैं तब आँखें नहीं, हमारी आत्मा देखती है। वास्तव में वह देखनेवाली आत्मा मैं ही हूँ।

We think that we see with our eyes. But our eyes are only the medium. When we look through a window or through the windscreen of a car, it is we who are seeing, not the window or the windscreen. Similarly, when we see with our eyes, it is the soul, not the eyes that observe. In reality, I am the soul that sees.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

स्वछन्दता और स्वतन्त्रता के बीच की भेदरेखा बहुत पतली है। इस लिये हमें सदैव यह जाँचते रहना चाहिये कि हम स्वतन्त्रता के नाम पर स्वछन्दता का पोषण तो नहीं कर रहे?

There is a thin line that separates uncontrolled behaviour from independence. Hence, we must always take care that we do not promote uncontrolled behaviour in the name of independence.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमारी उदारता यह नहीं बताती कि हम धनी हैं या नहीं।
हमारी उदारता तो हमारा व्यक्तित्व और भविष्य बताती है।

Our generosity does not indicate our wealth.
Instead, it indicates our personality and our future.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम अनादि से सच्ची समझ के अभाव की वजह से दु:ख भोग रहे हैं। जब हमारी समझ सच्ची यानी सम्यक् बन जाती है, तब हमारे वर्तमान और भविष्य दोनों सुखमय हो जाते हैं।

Since beginningless time, we have been suffering misery because we lack true understanding. When our understanding becomes correct (samyak), our present and future both become blissful.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मार्थी कभी भी वाद-विवाद में नहीं पड़ना चाहता। वह तो केवल अपनी आत्मा के लिये क्या आवश्यक है उस पर विचार कर बिना वाद-विवाद में पड़े उसी का पालन ख़ुद करता है और औरों को उस के लिये प्रेरित करता है।

The liberation-seeker never wants to get into arguments and debates. He only reflects upon what is essential for upliftment of his soul, follows it himself without getting involved in any argument and encourages others to do the same.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम अपने अधिकारों का दुरुपयोग करते हैं तब हमें यह अवश्य ख़याल रखना है कि हम अपना भविष्य दु:खमय बना रहे हैं।

When we misuse our powers, we need to bear in mind that we are ensuring a sorrowful future for ourselves.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

प्राप्त अधिकारों का सदुपयोग न सिर्फ़ हमें महान बना सकता है बल्कि हमारे वर्तमान और भविष्य भी सँवर सकते हैं।

Fair and just utilisation of our powers not only can make us great but also ensures a blissful present and future.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सत्य धर्म यानी कौन सा धर्म? सत्य धर्म यानी सम्यग्दर्शन। सत्य धर्म यानी आत्मज्ञान। सत्य धर्म यानी स्वात्मानुभूति। क्यों कि बिना आत्मज्ञान के धर्म में प्रवेश ही नहीं होता।

What does Satya Dharma mean? Which dharma does it denote? Satya Dharma means samyagdarśana. Satya Dharma means experiencing one's own soul. Satya Dharma means experiencing the true self. Because one cannot enter the path of dharma without experiencing one's own soul.

Samyagdarśana — enlightened perception, true insight

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मज्ञानी ज़्यादा से ज़्यादा समय आत्मा में रहना चाहते हैं परन्तु जब तक उन में चारित्र की निर्बलता है तब तक बग़ैर अभिप्राय के भी रोग के उपचार स्वरूप भोग भोगते हैं।

Those who have experienced their own soul wish to remain immersed in it as long as possible. But as long as they are not able to remain immersed in it continuously, they participate in sensual delectation without wishing to, just as one lives through disease without enjoying it.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अठारह प्रकार के पापों में मिथ्यात्व सब से बड़ा पाप है। उसे दूर करने के लिये एकमात्र आत्मज्ञान के लक्ष्य से अन्य पापों से दूर रहने का प्रयास करना चाहिये।

Of the 18 types of pāpa, mistaken identity of the self is the worst. In order to get rid of it, one must try to get rid of the other sins with the emphasis on attaining experience of the self.

18 Pāpa — violence, lies, stealing, fornication, possessiveness, anger, arrogance, artifice, avarice, attachment, aversion, quarrel, making false accusations, backbiting, likes & dislikes, criticising others, deceitful lies, mistaken identity of the self

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

साधक को लज्जायुक्त जीवन जीना चाहिये। निर्लज्जता से जीते हुए वह सच्ची साधना नहीं कर सकता।

The liberation-seeker must lead a life of modesty. He cannot be a true seeker if he lives shamelessly.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

दु:ख पुराने पापों से आता है। जब दु:ख आता है तब साधक जीव उस का प्रतिकार अवश्य कर सकता है परन्तु अपने भाव बिगाड़े बग़ैर। क्यों कि प्रतिकार करते हुए अगर अपने भाव बिगड़ते हैं तब अवश्य ही नये पापों का बन्ध होता है। वे नये पाप उसे भविष्य में नये दु:ख देने में सक्षम होते हैं।

Sorrow is a consequence of past sins. When faced with sorrow, the liberation-seeker can take appropriate steps, but without ruffling his disposition and demeanour. Because ruffled disposition certainly results in the bondage of new pāpa karmas which are capable of causing him in more sorrow in future.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

पाप छिपाने के भाव नये प्रगाढ़ पापों का बन्ध कराते हैं जो हमें भविष्य में दु:ख देने में सक्षम हैं।

The desire of hiding one's pāpas results in fresh bondage of intense pāpa karmas which are capable of causing us grief in future.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

साधक को अपने साथ प्रामाणिकता से रहना चाहिये। अगर वह अपने साथ बेईमानी करेगा तो उसे अनन्त काल तक दु:ख रूपी संसार में भटकना पड़ सकता है।

The liberation seeker must live honestly with himself. If he is dishonest with himself, then he may have to keep wandering endlessly in this sorrow-filled saṃsāra.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

इन्द्रिय के विषय जिस जीव को सुखमय प्रतीत होते हैं, वे उस जीव के लिये पाप बन्ध के कारण बनते हैं। वे पाप बन्ध उस जीव को बहुत काल तक दु:ख देने में सक्षम हैं।

Sensuous pleasures cause the inflow of pāpa karmas in those who think of them as a source of happiness. Those pāpa karmas are capable of causing him grief in the future.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम जब कोई भी पाप छिपकर करते हैं और आनन्दित होते हैं कि किसी को मेरे पाप की ख़बर नहीं है, तब वह पाप बन्ध हमें बहुत काल तक दु:ख देने में सक्षम होता है। क्यों कि ऐसे पाप बन्ध अधिक तीव्र होते हैं।

When we commit pāpas secretly and feel overjoyed that no one knows about our pāpas, the resultant pāpa karmas are capable of giving us much more grief for a very long period of time because such pāpa karmas are more intense.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हम जिस सम्प्रदाय में हैं वह हमें सत्य की और ले जा रहा है या नहीं यह अपने परिणाम देखकर जाँचते रहना है।

We should assess whether our sect/tradition is taking us towards the truth by checking our own basic disposition.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर परिणाम में कोई सुधार नहीं आ रहा है तब हमें यह जाँचना कि या तो डॉक्टर (गुरु) ठीक नहीं है या दवाई (साधना) ठीक नहीं है या फिर हम दवाई (साधना) ठीक से नहीं ले रहे हैं।

If there is no improvement in our own basic disposition, then we need to check whether the doctor (guru) and his prescribed medication (religious practices) are correct or not. Else, we are not taking the prescribed medication in the correct manner.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिन्हें धर्म करके देवगति चाहिये उन्हें शायद देवगति मिले या न भी मिले परन्तु उन्हें भविष्य में एकेन्द्रिय में अनन्त काल बिताना पड़ सकता है क्यों कि शास्त्रों में लिखा है कि दूसरे देवलोक तक के अधिकांश देव एकेन्द्रिय में जाते हैं।

Those who practise dharma because they desire to be reborn as celestial beings may or may not take rebirth as celestial beings. But in future, they may have to spend endless time as one-sensed beings because the scriptures say that most celestial beings residing up to the first and second heavens are reborn as one-sensed beings.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मप्राप्ति के लिये धर्म करनेवालों को देवगति सहज ही मिल जाती है और आत्मप्राप्ति के बाद अनन्त सुख रूपी मोक्ष मिलता है।

Those who practise dharma for seeking self-realisation are reborn as celestial beings without any effort. After attaining self-realisation, they also attain the eternal bliss of liberation.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जीव अपने कर्मों के अनुसार गति पाता है। जब रुचि इन्द्रियविषयों में होती है तब पापकर्म बँधते हैं और इस से दुर्गति मिलती है।

One is reborn as per his karmas. Interest in sensual pleasures leads to the bondage of pāpa karmas and this results in bad rebirth.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

सद्गति के लिये पुण्य आवश्यक हैं। अच्छी गति बार-बार मिले और फिर मोक्षप्राप्ति हो इस के लिये आत्मज्ञान ज़रूरी है।

Puṇyas are essential for a good rebirth. But in order to repeatedly get good rebirths and ultimately attain liberation, self-realisation is necessary.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

अगर वह पुण्य आत्मज्ञान के लक्ष्यवाला न हो तो पुण्य से बार-बार सद्गति मिलना थम जाता है। संसार पुण्य से पार नहीं होता बल्कि आत्मज्ञान से पार होता है।

Puṇya shall not repeatedly lead to good rebirths if that puṇya is not focused on self-realisation. Transmigration can be ended not by puṇya but by self-realisation.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

केवल आत्मज्ञान के लक्ष्यवाला पुण्य अच्छा माना जा सकता है।

Only puṇya focused on self-realisation can be considered good.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जब हम यह निर्णय कर लें कि एकमात्र आत्मज्ञान ही प्राप्त करने योग्य है, दूसरे कहीं भी पुरुषार्थ करने जैसा नहीं है, तब हमारी आत्मप्राप्ति आसान हो जाती है।

When we decide that self-realisation is the only worthy goal and nothing else deserves our focused efforts, our attainment of self-realisation becomes easier.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

शास्त्र को दर्पण समझ कर पढ़ना है। उस से अपने भावों का मिलान करते रहना है और अपने भावों को शास्त्र के अनुरूप बनाने का प्रयास शुरू करना है।

We should read the scriptures the way we look at the mirror, in order to know what we look like from the inside. We should keep assessing our innermost feelings and start trying to make them conform to the teachings of the scriptures.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हर परिस्थिति में विवेक को जागृत रखना आवश्यक है क्यों कि बिना विवेक के साधक कब गिर जाये मालूम नहीं पड़ता।

In all circumstances, one has to retain one's viveka (judiciousness) because, in the absence of viveka, the liberation-seeker could tumble anytime without even realising it.

Viveka — discernment and awareness

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमने अनादि से अपना सारा कौशल चालबाज़ी करने में लगाया है। अब से हमें अपना सारा कौशल चालबाज़ी छोड़ने में लगाना है।

Since beginningless time, we have focused all our energies on slyness. Now we should harness all our energies into getting rid of slyness.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

केवल नैतिक आचरण होने से आत्मज्ञान नहीं मिलता, उस के लिये अन्य योग्यताओं का होना भी उतना ही आवश्यक है।

Ethical conduct alone does not result in self-realisation. For self-realisation, other qualities are equally important.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

दूसरों के साथ कठोरता बरतने वालों को यह सोचना चाहिये कि जो मैं दे रहा हूँ वही मुझे मिलेगा। क्या मैं उस के लिये तैयार हूँ? ऐसा सोचते ही उन की कठोरता ख़त्म हो जायेगी जिस से उन का भविष्य सँवर जायेगा।

Those who are severe with others must realise that we receive what we give to others. They should ask themselves if they would like to be treated harshly. Once they begin thinking on these lines, their severity shall vanish and their future shall brighten.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

आत्मज्ञानी दयावान तो होता ही है। इस से यह नहीं समझना कि सिर्फ़ दयावान होने से आत्मज्ञान हो जायेगा। आत्मज्ञान के लिये अन्य योग्यताओं का होना भी आवश्यक है।

A self-realised soul is invariably compassionate. But do not think that compassion is the only criterion for self-realisation. Other qualities are also important if one has to achieve self-realisation.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

इस जीवन में अगर आत्मज्ञान न भी मिले तो हताश होने की ज़रूरत नहीं। हम सभी को कभी न कभी तो नींव डालनी ही है। एक बार सत्य मार्ग में चलना शुरु कर दिया तो मंज़िल अपने आप ही मिलनी है, उस में हताशा की कोई बात नहीं है।

One need not be discouraged if one does not attain self-realisation in this birth. All of us have to lay the foundation, sooner or later. Once we start walking on the right path, the destination shall arrive on its own. There is nothing to be disappointed about.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमें हर जीव से कुछ न कुछ ज़रूर सीखना है क्यों कि हर जीव में कोई न कोई गुण ज़रूर होता है।

We ought to learn something from each and every person because everyone has some good quality.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

बड़ों के अनुभव से हमें सीख लेनी है। नहीं तो हमें संसार में बहुत भटकना पड़ सकता है।

We must learn from the experience of our elders. Else, we might have to wander in samsara for a long time.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

जिन्हे ससांर में अपना नाम करना है और उसी के लिये काम करते हैं, उन्हें संसार में बहुत भटकना पड़ सकता है।

Those who seek name and fame and work only for this reason, might have to wander in saṃsāra for a long time.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

सत्य धर्म प्रवेशिका

हमारे शास्त्र कहते हैं कि हमने कई बार दीक्षा ली पर मोक्ष नहीं पाया। क्यों कि हमने बिना आत्मज्ञान के दीक्षा ली और बिना आत्मज्ञान के किसी का मोक्ष नहीं होता।

Our scriptures state that we took dīkṣā many times but did not attain liberation. This is because we took dīkṣā without self-realisation. And liberation is not possible without self-realisation.

CA Jayesh Sheth
www.jayeshsheth.com

मैत्री भावना – सर्व जीवों के प्रति मैत्री चिन्तवन करना, मेरा कोई दुश्मन ही नहीं ऐसा चिन्तवन करना, सर्व जीवों का हित चाहना।

प्रमोद भावना – उपकारी तथा गुणी जीवों के प्रति, गुण के प्रति, वीतरागधर्म के प्रति प्रमोदभाव लाना।

करुणा भावना – अधर्मी जीवों के प्रति, विपरीत धर्मी जीवों के प्रति, अनार्य जीवों के प्रति करुणाभाव रखना।

मध्यस्थ भावना – विरोधियों के प्रति मध्यस्थभाव रखना।

– मुखपृष्ठ की समझ –

अपने जीवन में सम्यग्दर्शन का सूर्योदय हो और उसके फलरूप अव्याबाध सुखस्वरूप सिद्ध अवस्था की प्राप्ति हो, यही भावना।